विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2561, भाद्रपद पूर्णिमा 6 सितंबर, 2017, वर्ष 47, अंक 3

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

यस्स चेतं समुच्छिन्नं, मूलघच्चं समूहतं।
स वन्तदोसो मेधावी, "साधुरूपो"ति वुच्चति॥
धम्मपदपालि- २६३, धम्मट्ठवग्गो

जिसके (भीतर से) ये (ईर्ष्या, मात्सर्य आदि) जड़मूल से सर्वथा उच्छिन्न हो गये हैं, वह विगतदोष मेधावी (पुरुष) 'साधुरूप' कहा जाता है।

धम्मचक्कपवत्तनसुत्त-प्रवचन (भाग 4/4)

(पूज्य गुरुजी ने साधकों के लाभार्थ जनवरी 1991 में धम्मगिरि पर इस सुत्त की व्याख्या हिंदी एवं अंग्रेजी में करते हुए इसे बहुत अच्छी तरह से समझाया है। सितंबर 2016 में इसका प्रथम चरण छपा था, मार्च 17 में दूसरा, तथा अगस्त- 17 में तीसरा चरण छपा। अब यह 4था और अंतिम चरण प्रस्तुत है।)

क्रमशः ...

भगवान के मुँह से निकला पहला उदान

.... जब कोई व्यक्ति ध्यान का काम शुरू करता है तो जो पहले चार ध्यान हैं -- उनमें से पहले ध्यान से ही ब्रह्मलोक की वाइब्रेशन शुरू हो जाती हैं। सोलह ब्रह्मलोकों में से हम किस तरह का ध्यान कर रहे हैं? प्रथम ध्यान की अवस्था तक पहुँचे तो प्रथम ध्यान का प्रयास करते हुए- इस ब्रह्मलोक से हमारा संबंध हो गया। दूसरे ध्यान से और ऊंचे ब्रह्मलोकों से संबंध हो गया। तीसरे, चौथे... यों ऊंचे से ऊंचे ब्रह्मलोकों से हमारा संबंध होता चला गया। एक ब्रह्मलोक जो काफी ऊंचायी पर है और बहुत सूक्ष्म है, उसके लिए कहा गया- **"अविहा"**।

यह अविहा क्या है? सारे ब्रह्मलोक, यहां तक कि अरूप ब्रह्मलोक जो भवाग्र, लोकाग्र तक स्थापित हैं; वे सारे के सारे ऐसे हैं कि वहां की अवधि समाप्त होने पर च्युति होगी ही। फिर गिरेगा ही। क्योंकि अपने अंतर्मन के सारे भव-संस्कारों को नहीं निकाला। आठों ध्यान कर लेने वाले व्यक्ति ने भी अपने मन के भव-संस्कारों की जड़ें नहीं निकालीं। क्लेश हैं अभी। क्योंकि उसने प्रथम ध्यान से लेकर आठों ध्यान तक किया है, तो जो-जो ध्यान किया है उस-उस लोक में उसकी उत्पत्ति हो जायगी। उनका जीवन बहुत लंबा होता है, अनेक कल्पों का, और ऐसी सुख-शांति का, कि उसका कोई मुकाबला नहीं। बाकी और लोकों में वैसी शांति नहीं मिल सकती; इतनी सुख-शांति का जीवन होता है। लेकिन क्योंकि अभी जड़ों से विकार नहीं निकले, तो जो कुछ उस ध्यान का फल उसे मिलना था, वह उसने सारा भोग लिया वहां पर। और जैसे ही वह समाप्त हुआ, कोई न कोई दबा हुआ विकार जो अभी निकला नहीं है, उसने मृत्यु के समय सिर उठाया और फिर कहीं न कहीं नीचे के लोक में आया। भव-चक्र उसका चलता ही रहा, चलता ही रहा।

यह "अविहा" ऐसा ब्रह्मलोक है जहां से पतन नहीं होता। ब्रह्मलोक में ही है, लेकिन इस लोक में आकर पतन नहीं होता। इसका मतलब कैसा व्यक्ति वहां पहुँचेगा? ऐसा ही जो **अनागामी** हो गया। फिर आने वाला नहीं है। स्रोतापन्न, सकृदागामी की अनुभूतियां करते हुए वह अनागामी की अनुभूति करेगा। अनागामी की अनुभूति करेगा तो चारों ध्यानों में उसे परफेक्ट भी होना पड़ेगा। चारों ध्यानों में परफेक्ट हुआ तो मृत्यु के समय उसको यही ब्रह्मलोक मिलेगा- अविहा। क्योंकि इससे अब गिरना नहीं है।

अब उस "अविहा" में जन्म लेने के बाद उसका जितना समय है, जीवनकाल है, उसे पूरा करके वहीं अर्हंत होकर मुक्त हो जायगा। इसलिए इसको "अविहा" कहा गया। ...

"इति हि तेन खणेन"- उस समय, उस क्षण **"तेन मुहुत्तेन"**- उस मुहूर्त में **"याव ब्रह्मलोका सद्दो अब्भुग्गच्छि"**- जैसे ही ब्रह्मलोक तक यह बात पहुँची कि संसार में कोई व्यक्ति सम्यक संबुद्ध हुआ है। उसने धर्मचक्र प्रवर्तन किया है (साधारण बात नहीं होती); जब ये तरंगें ब्रह्मलोक तक पहुँची तो- **"अयञ्च दससहस्सी लोकधातु सङ्कम्पि सम्पकम्पि सम्पवेधि..."**।

कोई व्यक्ति जब सम्यक संबुद्ध बनता है तब उसकी तरंगें दूर-दूर तक जाती हैं। यह व्यक्ति सम्यक संबुद्ध बना तो उसने चार असंख्येय और एक लाख कल्पों की पारमिताएं पूरी करके सम्यक संबुद्ध बना। जितने सम्यक संबुद्ध बनते हैं, उनमें यह सबसे छोटा सम्यक संबुद्ध। सिद्धार्थ गौतम सबसे छोटा सम्यक संबुद्ध है। उसने चार असंख्येय एक लाख कल्प की पारमिताएं पूरी कीं। और सम्यक संबुद्ध होते हैं जो आठ असंख्येय, और होते हैं जो बारह असंख्येय, और होते हैं जो सोलह असंख्येय कल्पों तक पारमिताएं पूरी करते-करते सम्यक संबुद्ध बनते हैं। तो जितनी अधिक पारमिताओं का संग्रह होगा, उतनी ही उनकी धर्म की तरंगें बड़े क्षेत्र तक प्रभावशाली होंगी। तो इस गौतम नाम के सम्यक संबुद्ध की पारमिताओं का जितना संग्रह है, उसकी वजह से दस हजार चक्रवालों तक उसकी वाइब्रेशन जाती है और उन लोगों को प्रभावित करती है।

जब यह घटना घटी तो दस हजार चक्रवाल-- यह चक्रवाल क्या होता है? एक चक्रवाल और एक सौरमंडल। एक सूर्य के इर्द-गिर्द कितने ग्रह-उपग्रह घूमते हैं। चक्रवालों का इन सूर्य, चंद्र इत्यादि से लेन-देन नहीं। ये जो इकत्तीस लोक हैं, इन इकत्तीस लोकों का एक चक्रमंडल है। इस तरह के दस सहस्र चक्रमंडल। इन जैसे दस सहस्र चक्रमंडलों में उसकी तरंगें पहुँची। तो इन दस सहस्र चक्रमंडलों में एक प्रकंपन हुआ।

"अप्पमाणो च उळारो ओभासो लोके पातुरहोसि, अतिक्कम्म देवानं देवानुभावन्ति। यह जो किसी देवताओं के, ब्रह्माओं के प्रकाश से जो प्रकाश फैलता है, उससे कहीं तेज प्रकाश उस समय इन दस

हजार चक्रवालों में जागा।

"अथ खो भगवा इदं उदानं उदानेसि"- यह घटना घटने पर भगवान के मुँह से उदान निकला, हर्ष के उद्गार निकले। जब हर्ष के, धर्म के उद्गार निकलते हैं, उसे उन दिनों की भाषा में "उदान" कहते थे। यह उदान निकला। क्या उदान निकला? भगवान की क्या वाणी निकली उस समय?

"अञ्ञासि वत, भो, कोण्डञ्ञो; अञ्ञासि वत, भो, कोण्डञ्ञो"ति। अरे, कौंडण्य ने जान लिया; अरे, .. कितना हर्ष! किस बात के लिए निकले? कि सारे लोग अंधकार में हैं। उन्हें पता नहीं कि धर्म क्या होता है? उन्हें पता नहीं- दु:ख क्या होता है? दु:ख का कारण क्या होता है? दु:ख का निवारण क्या होता है? दु:ख के निवारण का तरीका क्या होता है? पहली बार जो लोगों को समझाया; उस समझाने में एक व्यक्ति ने तो निरोध अवस्था प्राप्त कर ली। अरे, इसे ज्ञान मिल गया। एक व्यक्ति को तो सही ज्ञान मिल गया। ये उद्गार निकलते हैं भगवान के मुँह से-- "अञ्ञासि वत, भो, कोण्डञ्ञो,.. अरे, यह कौंडण्य नाम का ब्राह्मण, इसने सचमुच ज्ञान प्राप्त कर लिया। क्योंकि उसको निरोध अवस्था प्राप्त हो गयी। भगवान को मालूम हो गया कि इसको यह निरोध अवस्था प्राप्त हुई। एक को निरोध अवस्था प्राप्त हुई, सही ज्ञान प्राप्त हुआ, सम्यक ज्ञान प्राप्त हुआ, सही ज्ञान अनुभूति पर उतरा। "अञ्ञासि वत, भो, कोण्डञ्ञो'ति।" "इति हिदं आयस्मतो कोण्डञ्ञस्स अञ्ञा कोण्डञ्ञो त्वेव नामं अहोसी'ति"। उस समय के बाद इस कौंडण्य ब्राह्मण का नाम "अञ्ञाकोण्डञ्ञ" पड़ गया; ज्ञानी कौंडण्य। सही माने में 'ज्ञानी कौंडण्य' है और जीवनभर लोग उसको "अञ्ञाकोण्डञ्ञ", "ज्ञानी कौंडण्य" ही कहते रहे।

ये भगवान के उद्गार। किसी व्यक्ति को धर्म सिखाते हुए उसे सचमुच धर्म की उपलब्धि हो जाय तो सिखाने वाले के मन में हर्ष जागता है। यह पहला धर्म-चक्र और उस धर्मचक्र के प्रवर्तन में एक व्यक्ति को स्रोतापन्न अवस्था का साक्षात्कार हुआ। उसने अपने भीतर उदय-व्यय, उदय-व्यय, देखते हुए निरोध अवस्था का साक्षात्कार कर लिया।

इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि सारा काम प्रैक्टिकल ही प्रैक्टिकल। केवल थ्योरी की, सिद्धांतों की बात नहीं है, केवल उपदेशों की बात नहीं है।

उपदेश चल रहा है, उसके साथ-साथ एक आदमी ने विपश्यना शुरू कर दी। विपश्यना करते-करते निरोध अवस्था का अनुभव कर लिया। किसी सम्यक संबुद्ध की शिक्षा यही है कि हम केवल उपदेश सुनकर उसी से मोहित न हो जायँ। बड़े खुश हो जायँ, बड़ा गर्व करने लगें कि अरे, हमारे सम्यक संबुद्ध का क्या कहना? सचमुच सम्यक संबुद्ध था। देखो, कितनी सही बात कही! कितना शुद्ध धर्म सिखाया, जहां कोई लाग-लपेट नहीं, किसी प्रकार का कोई बंधन नहीं, कोई जकड़न नहीं, कितना शुद्ध धर्म! ऐसा हो तो हमें कुछ नहीं मिला।

जो कुछ बताया जा रहा है, वैसा हम कर रहे हैं, कर रहे हैं, कर रहे हैं। तीन प्रकार से इन चारों आर्य सत्यों का दर्शन कर रहे हैं, तो हमारा कल्याण होगा ही। तो बात ही इस प्रकार की हुई। धर्म-चक्र ही इस प्रकार चला।

भवतु सब्ब मङ्गलं! ...

कल्याणमित्र,

सत्यनारायण गोयन्का

पगोडा परिसर में विशाल संग्रहालय की परिकल्पना

हम बड़े भाग्यशाली हैं कि पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का जी से हमें परम परिशुद्ध धर्म प्राप्त हुआ।

सयाजी ऊ बा खिन की आज्ञा शिरोधार्य कर सन् 1969 में भारत आकर उन्होंने अनेक स्तरों पर धर्म का विस्तार किया। 400 से अधिक शिविरों का संचालन स्वयं करने के साथ-साथ सहायक आचार्यों की नियुक्ति, ट्रस्टी एवं केंद्रों की स्थापना, शिविर संचालन हेतु रेकार्डिंग, नियमावली, भविष्य के लिए दिशा-निर्देश आदि के साथ बुद्धवाणी को जीवित रखने के लिए 'विपश्यना विशोधन विन्यास' की स्थापना करके पालि पुस्तकों का प्रकाशन व प्रसारण करवाया। 'बुद्धवाणी' आज विश्व की चौदह लिपियों में इंटरनेट पर सर्वत्र सर्वसुलभ है। उनके द्वारा लिखे गये अनेकानेक लेख, पुस्तकों, प्रवचनों आदि का प्रकाशन हो रहा है।

और फिर जिस विश्व-विख्यात 'विश्व विपश्यना पगोडा' का निर्माण करवाया वह मानो धर्म की मशाल लेकर मूर्तरूप से खड़ा है और आने वाले समय में **'एहि-पस्सिको'** का आह्वान करता हुआ न जाने कितने भटके हुए लोगों का पथ-प्रदर्शन करता रहेगा।

धर्मधारा के इस महत्त्वपूर्ण दौर से चिरकाल तक प्रेरणा मिलती रहे इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह Archives (विशाल संग्रहालय-) योजना क्रियान्वित की जा रही है जहां विपश्यना संबंधी सभी प्रकार की उपलब्ध सामग्री-- यथा पूज्य गुरुजी के प्रवचन, दोहे, शिविर-संबंधी सामग्री, लेख, फोटोग्राफ्स, सार्वजनिक प्रवचन आदि एक साथ संगृहीत और सुरक्षित किये जायेंगे।

Museum (दर्शक-संग्रहालय) जन-सामान्य के लिए खुला रहेगा, जबकि संरक्षण-गृह दीर्घकालिक संग्रह (Digital Archives Centre) होगा।

ग्लोबल पगोडा के ट्रस्टीगण ने प्रस्तावित किया है कि श्री गोयन्काजी की इस धर्मयात्रा का विस्तृत विवरण व उनके साथ उनकी श्रद्धा और प्रेरणा के स्रोत रहे-- गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन, उनके गुरु सया तैजी तथा उनके गुरु भदंत लैडी सयाडो के बारे में भी प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर झांकियां प्रस्तुत की जायँगी।

Museum (दर्शक-संग्रहालय) की स्थापना मुंबई स्थित विश्व विपश्यना पगोडा के प्रांगण के एक हिस्से में की जा रही है। पगोडा परिसर को बुद्ध-धातु की पावन ऊर्जा अपूर्व शक्ति प्रदान करती है।

इस विशाल परियोजना में तन, मन और धन से अपनों का साथ होना अनिवार्य है। सामग्री एकत्र करने, उसे सुनियोजित ढंग से लगाने आदि में धर्म-संघ का सहयोग अत्यंत आवश्यक है। तभी यह महान कार्य अपना सही रूप ले सकेगा।

अच्छा हो अधिकाधिक साधकगण अपने-अपने संस्मरण व संग्रह के साथ आगे आयें और अपना अमूल्य समय देकर इस पावन परियोजना को प्रोत्साहन दें। संभव है किसी के पास पूज्य गुरुजी से संबंधित फोटोग्राफ, पत्र, लेख इत्यादि हों। उनकी अमूल्य निधि निश्चित रूप से इस धर्म-इतिहास का महत्त्वपूर्ण अंग बनेगी।

हमारा सौभाग्य है कि इतिहास के इस महत्त्वपूर्ण मोड़ पर हम अपने आपको खड़ा पा रहे हैं। हम आगे बढ़ें और चिरकाल से चली आ रही शुद्ध धर्म की गुरु-शिष्य परंपरा, विशेषकर पूज्य श्री

सत्यनारायण गोयन्का के प्रति अपना गहन आभार व्यक्त करते हुए इस महत् परियोजना का महत्त्वपूर्ण अंग बन कर अपनी पारमी विकसित करें। जिन लोगों के पास जो भी सामग्री उपलब्ध हो, उसे वे कृपया अपनी कृतज्ञता प्रकट करने हेतु कृपया निम्न पते पर यथाशीघ्र भेजें:--

विपश्यना विशोधन विन्यास, व्यवस्थापक, आर्काइव्ज़ कार्यालय, गोराई खाड़ी, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई-400091. ईमेल- dhammaarchives@globalpagoda.org

शीघ्र ही एक विशेष "ऐप-लिंक" जारी किया जा रहा है। जिनके पास सुविधा होगी वे इसे डाऊनलोड करके इसके माध्यम से सारी सामग्री सुनियोजित ढंग से भेज सकेंगे। इस पर काम चल रहा है। अगले अंक में इसका पूरा विवरण उपलब्ध हो जायगा।

धन्यवाद!

व्यवस्थापक,

विपश्यना विशोधन विन्यास, मुंबई

पूज्य गुरुजी एवं पूज्य माताजी की पुण्य-तिथियों पर वृहत् संघदान का आयोजन

ग्लोबल विपश्यना पगोडा परिसर में आगामी **1 अक्टूबर** को पूज्य गुरुदेव श्री गोयन्काजी तथा **14 जनवरी**, 2018 को पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि के अवसर पर प्रातः 10 बजे **वृहत्संघदान** का आयोजन किया जा रहा है। उसके बाद 11 बजे से साधक-साधिकाएं **एक दिवसीय महाशिविर** का लाभ ले सकेंगे। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यवर्धक दान-कार्य में भाग लेना चाहते हों, वे कृपया निम्न नाम-पते पर संपर्क करें-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, फोन नं. 022-62427512 (9:30AM to 5:30PM), Email: audits@globalpagoda.org

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी धातु-पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। सगे-संबंधियों की याद में ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. ५०००/- निर्धारित किये गये हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, Email: audits@globalpagoda.org

प्राथमिक पालि अभ्यास कार्यक्रम

दि. 7 अप्रैल से 22 मई, 2018, योग्यता-- 3 10-दिवसीय शिविर, एक सतिपट्ठान शिविर तथा आचार्य की अनुमति के अतिरिक्त 12वीं कक्षा पास होना चाहिए। स्थान-- परियत्ति भवन, ग्लोबल पगोडा परिसर, गोराई. आवेदन-पत्र हेतु निम्न शृंखला का अनुसरण करें-- http://www.vridhamma.org/Theory-And-Practice-Courses या फोन करें- 022-62427560 (9:30AM to 5:30PM), E-mail: mumbai@vridhamma.org

निर्माणाधीन विपश्यना केंद्र- धम्मपदेस

रत्नागिरि रेल्वे स्टेशन (महाराष्ट्र) से 20 किमी. दूर कोंकण क्षेत्र के पाली गांव में 6.5 एकड़ भूमि पर नये विपश्यना केंद्र- 'धम्मपदेस' कोंकण विपश्यना मेडीटेशन सेंटर के निर्माण का कार्य आरंभ हो चुका है। यह स्वाभाविक रूप से हरी-भरी पहाड़ियों के बीच एक रमणीय स्थल है जहां का मौसम सदैव बहुत सुहाना और साधना के अति अनुकूल है। केंद्र-निर्माण की सभी औपचारिकतायें पूरी कर ली गयी हैं। इसके प्रथम चरण में लगभग 50 साधकों के अनुरूप आवश्यक प्राथमिकताओं सहित निवास, धम्मकक्ष, रसोईघर, कार्यालय आदि का काम होगा। दूसरे चरण में 100 व्यक्तियों तक के लिए धम्मकक्ष, पगोडा आदि को सम्मिलित किया जायगा। जो भी साधक-साधिका इस महत् परियोजना में सम्मलित होना चाहें, वे अपने पुण्यवर्धन हेतु निम्न ईमेल व फोन पर संपर्क कर सकते हैं— 1. Mr. Santosh Ayare - 099605 -03598, 2. Mrs.Yugandhara Rajeshirke - 094211 34073, **Email:** dhammapadesh@gmail.com; Bank: Bank of India, Ratnagiri, Name- Konkan Vipassana Meditation Centre, Saving a/c No. 140010110012878, IFSC Code - BKID0001400, MICR code - 415013051.

धम्म उपवन, बाराचकिया (धम्मगृह)

बाराचकिया, बिहार के पूर्वी चम्पारन जिले में है जहां पूज्य गुरुजी ने १२ से २२ मार्च, १९७० में ४८ लोगों का पहला शिविर चीनी-मिल में संचालित किया था। इसके बाद बाराचकिया में और भी कई शिविर लगे परंतु अभी तक कोई विपश्यना केंद्र नहीं बन पाया। शहर के बीच एक छोटी-सी जगह है जहां एक-दिवसीय शिविर व सामूहिक साधना होती है। इसी स्थान पर अब तीन दुमंजिले भवन बना कर केंद्र का रूप दिया जा रहा है जिसमें लगभग ४५-५० लोगों का शिविर लग सकेगा। कार्यारंभ हो चुका है। जो भी साधक-साधिका चाहें, इस महापुण्य में भागीदार बन सकते हैं। **संपर्क**-- श्री सज्जन गोयन्का, फोन- ९४३१२४५९७१, ७७६६८३४५००. Bank A/c.: Dhamma Upavana Vipassana Sadhana Kendra, Bank of India, Branch-Kunriya. A/c. no. **444610100002841,** IFSC- BKID0004446. Email: puddagal@gmail.com;

(सूचना - पिछली पत्रिका में बाराचकिया का बैंक अकाउंट नंबर गलत छप गया था, कृपया इसे सुधार लें।)

धम्मकाया, कुशीनगर विपश्यना केंद्र

भगवान का महापरिनिर्वाण स्थल कुशीनगर, जहां उन्होंने इस आखिरी जीवन की अंतिम सांस ली थी। यहां दिसंबर २०१६ में पहला शिविर केवल पुरुषों के लिए लगा। उसके बाद से नियमित शिविर लग रहे हैं। साढ़े तीन एकड़ भूमि पर लगभग ६० साधक-साधिकाओं के लिए निवास और भोजनालय बन चुका है। १०० साधकों के लिए धम्म-कक्ष तथा अन्य आवश्यक निर्माण होना शेष है। जो भी साधक-साधिका इस पुण्य में सम्मिलित होना चाहें, निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं-- धम्मकाया विपश्यना साधना केंद्र, ग्राम-पोस्ट-धुरिया, तहसील-कसया, कुशीनगर-देवरिया रोड, कुशीनगर-274402. फोन- 9415277542, Email- dhammakaaya.vskk@gmail.com; Bank a/c for Dhammakaya, Kushinagar-- 'JETVAN VIPASSANA MEDITATION CENTRE,' A/C. NO. 35781747907, IFSC-SBIN0003168, SBI, Med. collage, Gorakhpur.

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री एन. प्रेम कुमार, तमिलनाडु
2. श्री सुरेश लांजेवार, नागपुर
3. कु. शीला सोनटक्के, नागपुर
4. Mrs. Beeta Koswatta, Sri Lanka
5. Mr. Hung Sung Lin,Taiwan
6. Mr. Chiente Wu, Taiwan
7. Mr. Xiao Liu, China
8. Mr. Zengguang Ma and
9. Mrs. Li Bin, China

बाल-शिविर शिक्षक

1. डॉ रंजना कन्निया, मुंबई
2. श्री मुकुल शर्मा, मुंबई
3. कु. ममता लकुम, भावनगर
4. सौ. मीना शाह, भावनगर
5. सौ. प्रवीणाबेन सोलंकी, भावनगर

6–7. श्री हारदिक एवं श्रीमती निकिता चौहाण, भावनगर

8. Mr. Sebatien Rousset, Mauritius
9. Mrs Nirupa Rughoo, Mauritius
10. Ms. Isabelle Quintard, La Re-union
11. Mrs. Zhang Yiqing, China
12 Mr. Yu Dong, China
13. Ms. Xie Aihua, China

Registered No. NSK/235/2015-2017

विपश्यना पगोडा परिसर में वृहत् संरक्षण-गृह की योजना

पगोडा परिसर में एक बड़े अभिलेखागार या संरक्षण-गृह (Digital Archives Centre) की योजना पर काम चल रहा है जिसमें पूज्य गुरुजी ने जब से काम शुरू किया तब से लेकर आज तक के सभी प्रकार के आलेख, टिप्पड़ियां (नोट्स), पुस्तकें छायाचित्र (फोटो), कथानक (ऑडियो), चलचित्र (वीडियो), विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा किये गये सभी प्रकार के शोधकार्य, विपश्यना पगोडा संबंधी फोटोज, नक्शे व अन्य संबंधित दस्तावेज आदि का समावेश होगा।

यह कार्य कई वर्षों तक चलता रहेगा। कार्यारंभ करने के लिए हमें अनेक कम्प्युटर, स्कैनर, प्रिंटर आदि के साथ सभी प्रकार के सामान रखने के समुचित स्थान और इस पूरी परियोजना का संचालन करने वाले कार्यकर्ताओं के वेतन आदि का भी ध्यान रखना है। प्रारंभिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लगभग पच्चीस लाख का खर्च आयेगा, तथा वेतनादि के लिए लगभग १५-२० लाख वार्षिक लगेंगे।

'विपश्यना विशोधन विन्यास' का रजिस्ट्रेशन सेक्शन ३५ (१) (३) के अंतर्गत हुआ है, जिससे दानदाताओं को **१२५ प्रतिशत आयकर की छूट** प्राप्त होगी। जो भी साधक-साधिका इस पुण्य में भागीदार बनना चाहें वे निम्न पते पर **संपर्क** कर सकते हैं-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2.Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, A/c. Office: 022-62427512/ 62427510; Email: audits@globalpagoda.org; Bank Details of VRI -- 'Vipassana Research Institute', Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments, Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064, Branch - Malad (W). Bank A/c No. - 911010004132846; IFSC No.- UTIB0000062; Swift code: AXISINBB062.

पगोडा परिसर में धर्मसेवकों तथा साधकों के लिए निःशुल्क आवास-सुविधा

प्रत्येक वर्ष ''**विश्व विपश्यना पगोडा**'', गोराई- बोरीवली (मुंबई) में **एक दिवसीय महाशिविरों** का आयोजन होता रहता है। उनमें शामिल होने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। परंतु दुर्भाग्य से वहां उनके रात्रि-विश्राम की कोई समुचित सुविधा नहीं है। अतः योजना है कि पगोडा-परिसर में अलग से एक ३-४ मंजिला भवन का निर्माण किया जाय जिसमें कुछ स्थायी धर्मसेवकों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में आने वाले साधकों के लिए कुछ एकाकी और कुछ सामूहिक निवास की व्यवस्था की जा सके ताकि रात्रि-विश्राम के बाद वे सुबह आराम से उठ कर भली प्रकार साधना का लाभ उठा सकें। तदर्थ जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे संपर्क करें:- 1. Mr. Derik Pegado, or 2. Sri Bipin Mehta, (*details as in Archives Center*). Email: audits@globalpagoda.org

---

ग्लोबल विपश्यना पगोडा में २०१७ के एक-दिवसीय महाशिविर

रविवार, १ अक्टूबर-- शरद पूर्णिमा एवं पूज्य गुरुजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में तथा **रविवार, १४ जनवरी, २०१८ पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में-- समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक। ३ बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपो सुखो**- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्कः** 022-28451170, 022-62427544, 8291894644 - Extn. 9, (**फोन बुकिंग : ११** से ५ बजे तक, प्रतिदिन) Online Regn.: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

तृष्णा जड़ से खोद कर, अनासक्त बन जाय।
भव सागर से तरन का, यह ही एक उपाय॥

विपश्यना से पाप की, जड़ें उखड़ती जायँ।
सारे अंतर्लोक के, ढंग सुधरते जायँ॥

सम्यक दर्शन ज्ञान से, अंतर संवर होय।
नए कर्म बांधे नहीं, क्षीण पुरातन होंय॥

तन-मन निरखत निरखते, निर्विकार बन जायँ।
तो दुख के उत्पाद की, जड़ें सभी हिल जायँ॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- ४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धर्म रा

त्रिस्णा जड़ स्यूं खनन रो, यो ही एक उपाव।
नरविकार निरखत रवै, काया चित्त सुभाव॥

"मैं, मेरे" री भ्रांति नै, विपस्सना स्यूं देख।
या तो विधि है सुद्धि री, बचै न दुख री रेख॥

राग द्वेस जद भी जगै, राख उणांरो ध्यान।
ध्यान रह्यां उखड़ण लगै, रवै न नाम-निसाण॥

विपस्सना रो धरमजळ, मळ मळ चित्त नहाय।
न्हातां न्हातां आप ही, मैल सभी धुल ज्याय॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- ४२२ ४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, २५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-४२२ ००७. **बुद्धवर्ष २५६१, भाद्रपद पूर्णिमा, ६ सितंबर, २०१७**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. ५००/-, US $ 100. 'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/235/2015-2017

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 25 August, 2017, DATE OF PUBLICATION: 6 September, 2017

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६, २४३७१२, २४३२३८. **फैक्स :** (०२५५३) २४४१७६
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org